लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-100

सप्तवेणी

सपादिका-घनाक्षरिका-दोधक-सौराष्ट्रक-वरवृत्त-षट्पद-
कुण्डलिकाश्रितसंस्कृतमुक्तच्छन्दसां सङ्कलना

प्रधानसम्पादकः
प्रो. परमेश्वरनारायण शास्त्री
कुलपतिः

प्रणेता
प्रो. अभिराजराजेन्द्रमिश्रः
त्रिवेणीकविः

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्
(भारतशासनमानवसंसधनविकासमन्त्रालयाधीनः
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्ययानपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्ययायितः मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

नान्दीवाक्

सप्तवेणी में सवैया (सपादिका), घनाक्षरी (घनाक्षरिका), दोहा (दोधकम्), सोरठा (सौराष्ट्रकम्), बरवै (वरवृत्तम्), छप्पय (षट्पदम्) तथा कुण्डलिया (कुण्डलिका) छन्दों की सात वेणियाँ हैं। वस्तुतः ये सातों वेणियाँ हिन्दी की जनबोलियों-ब्रजभाषा तथा अवधी की अत्यन्त लोकप्रिय विधाएँ रही हैं जिनमें अपार काव्य-वाङ्मय प्रणीत किया गया है। हिन्दी का भक्ति एवं रीतिकाल तो शत-प्रतिशत इन्हीं छन्दों में विद्यमान है। इन छन्दों की गंगा का गोमुख अपभ्रंश काव्याद्रि के शिखर पर था। वहीं से उतर कर यह छन्दोविचिति-गंगा डिङ्गल-पिङ्गल में आई, ततश्च ब्रजभाषा, अवधी, बघेली, बुन्देली आदि में।

महाकवि मतिराम, देव, सेनापति, द्विजदेव ग्वालकवि, दासजू, रसखान, पद्माकर, राजा जसवन्तसिंह, रघुनाथ, बेनीप्रसाद, कवि मण्डन, नेवाज, गोकुलनाथ, घनानन्द, शेख, ठाकुर तथा रत्नाकर जैसे कवियों ने सवैया एवं घनाक्षरी-विधा में कालजयी कविता लिखी।

वाल्मीकि-अवतार गोस्वामी तुलसीदास ने तो रामचरितमानस में अपभ्रंश के अनेक छन्दों का, जो रासोकाव्य में प्रयुक्त होने के बाद, प्रायः समुचित प्रयोक्ता के अभाव में, विस्मृति-गर्भ में डूब गए थे, भूयः प्रयोग किया। तथापि उन्हें विशेष कीर्ति दोहा, सोरठा, सवैया तथा बरवै छन्द से मिली।

दोहा यद्यपि भाषिकदृष्ट्या संस्कृत छन्द **दोधक** का तद्भव रूप प्रतीत होता है। तथापि दोनों में कोई तात्त्विक साम्य नहीं हैं। तुलसीदास के अनन्तर महाकवि अब्दुर्रहीम खानखाना, कबीरदास,

विषयानुक्रमणिका

	प्राग्वाचिकम्	
	नान्दीवाक्	iii
१.	**सपादिका (सवैया)**	०१-२२
	(क) मृदुकं हृदयम्	०३
	(ख) दुकूलचौरचरितम्,	०६
	(ग) युगलसङ्गमः	०९
	(घ) सपादिका मधुमासस्य	१२
	(ङ) कलिसपादिकाः	१६
२.	**घनाक्षरिका (घनाक्षरी)**	२३-५२
	(क) लोकवृत्तविंशतिका	२५
	(ख) अन्योक्तिविंशतिका	३२
	(ग) भारतदशकम्	४०
	(घ) आर्तिदशकम्	४४
	(ङ) आञ्जनेयस्तवनम्	४८
३.	**दोधकम् (दोहा)**	५३-६४
	(क) वसन्तदोधकानि	५५
	(ख) अनुभवपञ्चाशिका	५७
	(ग) नीतिदोधकानि	६२

जननान्तरसौहृदमेतदहो महिमा-
ऽस्य न केन शिरोनिहितः
तदवैति मनो हिमहारविमौक्तिक-
तारतरं यदि वाऽर्यगुणम्।
रतिकाममखे न परे विबुधा
न परे मखिनो, न तदन्यफलम्
रुचिराक्षि! परा खलु देवता त्वं
स्मरतीति विलीनमिदं हृदयम्॥७॥

षड्ऋतूञ्जनयस्ययि चित्रविहङ्गि!
कुतो ननु शिल्पमिदं मिलितम्?
कुरुषे ननु मां परुषं सरसं
शिशिरं सुभगं स्तिमितं ललितम्।
त्वयि मेऽवसिताः सकला हि मनोरथ-
चारुचया, वद किन्नु भयम्?
सकलाक्षि! निसर्गमयी त्वमसि
प्रणतः पुरुषः प्रणतं हृदयम्॥८॥

कति जन्मकदम्बकमापतितं
न च तेऽद्य न मे स्मृतमास्वदितम्
जननान्तरसङ्गतिविज्ञमिदं
मन एव परन्तु चिनोत्यखिलम्।
पुनरागमने न च मे, न च ते
तनुकापि न कापि मनोविमतिः
दयिताक्षि! समं नु भवेदुदयः
सममेव भवेन्निहतं हृदयम्॥९॥

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम
(भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्ययानपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्ययायितः मानितविश्वविद्यालयः)
56-57, इन्स्टीटयूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली- 110058
दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977